प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 25: शिष्यत्व की गतिशीलता (11a)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **लूका 4:3-4**
3 शैतान ने उससे कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो इस पत्थर को रोटी बनने का आदेश दे।"
4 और यीशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है, 'मनुष्य जीवित नहीं रहेगा सिर्फ रोटी से'"।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **लूका 4**
लिंक: https://www.biblegateway.com/passage/?search=Luke%204&version=ESV

***चरण 4**: व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:*

एक. फिलिप्स कहते हैं कि शिष्यत्व के सात गतिशीलता या ऊर्जा प्रदान करने वाले तत्व हैं जिनकी हर शिष्य को शिष्य बनाने में उत्पादक बनने के लिए आवश्यकता होती है।

दो. ट्रेनर इन एनर्जाइज़रों के शिक्षण और प्रदर्शन को प्रभावित करने के लिए जिम्मेदार होता है।

*तीन.***पूजना**: हमें अपना पूरा जीवन परमेश्वर के सामने आराधना के रूप में प्रस्तुत करना है। हमें परमेश्वर के साथ एक ऐसा संबंध प्रस्तुत करना है जो रोज़ाना नया हो (नई वाइन के लिए नई वाइन की खाल)।

*चार.***मंत्रालय**: हमें एक-दूसरे की सेवा करनी है। उन्हें सत्य में पवित्र बनाना है। एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करनी है।

पाँच. **स्मरण**: साप्ताहिक पद को याद करें। यह हमारी अपेक्षा है प्रशिक्षक और प्रशिक्षु दोनों से। अपने दिलों में परमेश्वर के वचन और इच्छा को रखें। "मसीह का वचन आपके भीतर समृद्ध रूप से वास करे" (कुलुस्सियों 3:16)।

***चरण 5**: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 11a लेखक – कीथ फिलिप्स के अनुसार:

शिष्यत्व की गतिशीलता

आपके शिष्य की ईश्वर को जानने की उत्सुकता, उनकी उपलब्धता, समर्पण, विश्वासयोग्यता और दृष्टि उनकी शिष्य बनने की तत्परता को दर्शाते हैं। आपका मसीह जैसा चरित्र और उनके साथ आपका संबंध आपको उन्हें शिष्य बनाने के योग्य बनाता है। हालांकि, कुछ अन्य तत्वों के बिना वह कभी प्रजनन नहीं कर पाएगा। वह बिना ईंधन के इंजन या हवा के पवनचक्की की तरह होगा—महान क्षमता लेकिन स्थिर और निष्क्रिय।

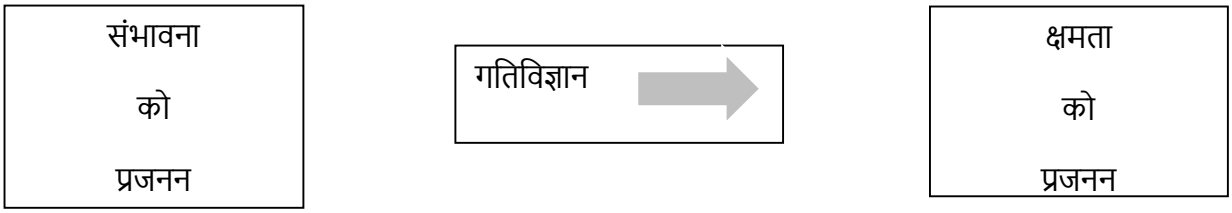

आपके शिष्य की फल देने की इच्छा को प्रजनन क्षमता में बदलने के लिए, उसके आध्यात्मिक वातावरण में सात तत्व होने चाहिए। यदि एक भी तत्व गायब है, तो आपके शिष्य का प्रशिक्षण अपर्याप्त होगा। ये शिष्यत्व की गतिशीलता हैं, ऊर्जा देने वाले।

एक बार जब वे आपके शिष्य का स्वाभाविक हिस्सा बन जाते हैं, तो वे एक धार्मिक चरित्र उत्पन्न करते हैं। जब वह उन्हें इतनी अच्छी तरह समझता है कि दूसरों को दे सकता है, तो वह पुनरुत्पादन के लिए तैयार होता है। आप जिम्मेदार हैं कि आप उन्हें ये गतिशीलता प्रदान करें। हालांकि शिष्यत्व जीवन से जीवन की मुलाकात है, आपको हर सप्ताह मिलने के लिए नियमित समय निर्धारित करना होगा। अपने व्यक्तित्व को अपनी बैठकों की संरचना निर्धारित करने दें और उनकी आवश्यकताओं को सामग्री निर्धारित करने दें। हालांकि, केवल इन बैठकों से उनकी वृद्धि को प्रोत्साहित करने की उम्मीद न करें। वास्तविक जीवन के अनुभव और व्यक्तिगत संपर्क अभी भी सर्वोपरि हैं।

पूजना

आपके संबंध का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर का सम्मान और महिमा करना है। आराधना वह आराधना की भावना है जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम, विस्मय और सम्मान को व्यक्त करती है। आपका उदाहरण आपके शिष्य को प्रोत्साहित करेगा कि वह अपना पूरा जीवन परमेश्वर के सामने आराधना के रूप में प्रस्तुत करे। परमेश्वर ने हमारे लिए कोई निश्चित पूजा विधि निर्धारित नहीं की है। यीशु ने सिखाया कि "... कोई भी पुरानी दाखरस की खालों में नई शराब नहीं डालता; अन्यथा शराब की खाल फट जाएगी, और शराब खो जाएगी, और खाल भी; लेकिन कोई नई शराब ताजे दाखरस में डालता है" (मरकुस 2:22)। चूंकि आपका परमेश्वर के साथ संबंध रोजाना नया है, आप अपने प्रेम और भक्ति को अपनी भावनाओं को दर्शाने के लिए स्वतंत्र हैं। यदि आप पारंपरिक तरीकों से बंधे हैं तो आपकी पूजा बासी हो जाएगी। लेकिन जब आप जो कुछ भी करते हैं उसमें परमेश्वर का सम्मान और महिमा करने की कोशिश करते हैं, तो आपका हृदय और मन उस पर केंद्रित होता है, और उसकी आत्मा आपको सहजता और स्वतंत्रता के साथ पूजा करना सिखाता है। अपने शिष्य के साथ नियमित रूप से पूजा करें। आप शास्त्र पढ़ सकते हैं, उद्धृत कर सकते हैं या गा सकते हैं। आप अन्य विश्वासियों के साथ खुशी से भोजन कर सकते हैं। आप प्रार्थना कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं, अपनी खुशी के संगीत या काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ लिख सकते हैं, ताली बजा सकते हैं, कोई वाद्ययंत्र बजा सकते हैं या बस विनम्र श्रद्धा में सिर झुका सकते हैं। केटी और मैं केवल एक बच्चे की उम्मीद कर रहे थे जब जोशुआ और पॉल का जन्म हुआ। हालांकि मैंने अपने पुत्रों के लिए मौखिक रूप से भगवान की प्रशंसा की, मुझे लगता है कि मेरी पूजा की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति एक मुस्कान थी। मुझे बताया गया है कि यह मेरे चेहरे पर कई दिनों तक मजबूती से जमी हुई थी। भगवान कौन हैं और उन्होंने आपके लिए जो किया है, उसके प्रति कृतज्ञता में, आपके जीवन से खुशी फूल की खुशबू की तरह निकलनी चाहिए। भगवान इस बात से कहीं अधिक चिंतित हैं कि आप उनकी पूजा ईमानदारी से करते हैं बजाय इसके कि आप उनकी पूजा कैसे करते हैं। सिर्फ "भगवान की स्तुति करो" कहने में कोई जादू नहीं है। यदि आपकी आत्मा और जीवनशैली आपके शब्दों के अनुरूप नहीं है, तो "परमेश्वर की स्तुति करो" व्यर्थ की बातें या ईशनिंदा बन जाती है, जो प्रभु के नाम को व्यर्थ ले जाती है। कानून के अक्षर का पालन करते हुए उसकी आत्मा का मज़ाक उड़ाने के फरीसी जाल में न फंसें। जब आपकी पूजा आत्मा द्वारा संचालित होती है, तो यह परमेश्वर के प्रति एक प्रतिक्रिया होती है जो उसकी महिमा करती है (1 कुरिन्थियों 10:31), शरीर को मजबूत करती है (1 कुरिन्थियों 14:3, 12) और आपको और आपके शिष्य को बनाती है (1 कुरिन्थियों 10:23)।

मंत्रालय

एक-दूसरे की सेवा करें। शास्त्र के माध्यम से एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें। अपनी जीतों में आनंदित हों। अपने बोझ साझा करें और अपने पापों को स्वीकार करें। फिर इन चिंताओं के बारे में विशेष रूप से प्रार्थना करें, परमेश्वर की चंगाई और क्षमा का दावा करें। एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करना आपके जीवन का नियमित हिस्सा बनना चाहिए। यीशु ने अपने शिष्यों की ओर से पिता से विनती की, "मैं तुमसे यह नहीं चाहता कि उन्हें संसार से निकाल दो, बल्कि उन्हें दुष्ट से दूर रखो--- उन्हें सत्य में पवित्र बनाओ..." (यूहन्ना 17:15,17)। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "... मैं तुम्हें दिन-रात अपनी प्रार्थनाओं में लगातार याद रखता हूँ" (2 तीमुथियुस 1:3) और उसने इफिसियों से विनती की कि "मेरे लिए प्रार्थना करो..." (इफिसियों 6:19)। तुम्हारे संबंध की जीवंतता तुम्हारे एक-दूसरे के लिए प्रार्थनाओं पर निर्भर करती है। एक-दूसरे की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें (2 कुरिन्थियों 13:7) और विकास के लिए (कुलुस्सियों 1:9,10)। अपने शिष्य को सलाह देते हुए और उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर से मार्गदर्शन मांगें। याकूब हमें प्रोत्साहित करते हैं, "लेकिन यदि तुम में से किसी के पास बुद्धि की कमी है, तो वह परमेश्वर से मांगे, जो सभी मनुष्यों को उदारता और बिना किसी दोष के देता है, और वह उसे दिया जाएगा" (याकूब 1:5)। एक-दूसरे की सेवा करने का यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब हमारा काम युवा था, तो मैं अक्सर अपने पुरुषों का मंत्रालय के बारे में सवालों

की बौछार करता था। दूसरों तक पहुंचने और एक पीड़ित दुनिया की आवश्यकताओं को पूरा करने की मेरी उत्सुकता ने मेरे शिष्यों की आध्यात्मिक भलाई के प्रति मेरी चिंता को पीछे छोड़ दिया। मैंने बस यह मान लिया कि वे अपने व्यक्तिगत जीवन में विजयी होंगे।

दुर्भाग्य से, अगर वे किसी कमजोरी या पाप से जूझ रहे थे जिसे सुलझाया नहीं गया था, तो हमारे साथ बिताए समय बेकार थे। "होना" से पहले "करने" के लिए झुकना आसान है। मेरे शिष्यों का चरित्र और आवश्यकताएं अब उनके मंत्रालय से अधिक प्राथमिकता हैं। आपके साथ बिताए समय को आप दोनों को बढ़ाना और शिक्षित करना चाहिए।

स्मरण

ईसाई धर्म में शास्त्र को याद करना एक खोई हुई कला बनता जा रहा है। फिर भी बाइबल अक्सर विश्वासियों से आग्रह करती है कि वे परमेश्वर के वचन को अपने भीतर रखें (नीतिवचन 7:1)। मूसा ने जोर दिया कि परमेश्वर के लोग अपने हृदय में उसका वचन रखें (व्यवस्थाविवरण 6:6)। शास्त्र की स्मृति पाप के खिलाफ हमारी सबसे अच्छी रक्षा है (भजन संहिता 119:11)। जब यीशु शैतान द्वारा प्रलोभित हुए, तो परमेश्वर की आत्मा ने उनके वचन को याद किया और तत्काल, स्थायी शक्ति प्रदान की (लूका 4:4-12)। शास्त्र की याद करना मसीह जैसे चरित्र को आकार देने में एक अमूल्य सहयोगी है। यह बुद्धिमान सलाह और सुधार का आधार है। एक महिला शिष्य बचपन में अस्वीकृति और उपहास से उत्पन्न असुरक्षा और अपरिपक्वता से जकड़ी हुई थी। पूरे दिल से वह चाहती थी कि परमेश्वर उसे इस आत्म-घृणा से मुक्त करे, लेकिन आंतरिक शांति और आत्म-स्वीकृति पूरी तरह से पहुंच से बाहर लग रही थी। फिर उसकी शिष्या ने उसके साथ परमेश्वर के गुणों के बारे में शास्त्र याद किया। सप्ताह दर सप्ताह वे इन पदों की समीक्षा करते रहे। कुछ महीनों के भीतर, परमेश्वर के वचन ने उसमें पवित्रता, परिपक्वता और सुरक्षा की एक नई गहराई उत्पन्न की। शास्त्र का स्मरण आपके शिष्य के हृदय पर परमेश्वर की इच्छा अंकित करेगा (भजन संहिता 37:31)। यह पूजा और संगति को सुगम बनाता है (इफिसियों 5:19)। हर सप्ताह एक या दो पद एक साथ याद करें और पहले सीखी अन्य आयतों की समीक्षा करें। सप्ताह के हर दिन एक-दूसरे के लिए याद किए गए पदों में से एक प्रार्थना करें। आप और आपके शिष्य को कुलुस्सियों 3:16 का पालन करना चाहिए: "मसीह का वचन आपके भीतर समृद्ध रूप से वास करे...."

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशित: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। नीचे दी गई सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123